अध्याय 39

याजकीय वस्त्र तैयार करना और निवास-स्थान को प्रस्तुत करना

निर्गमन 39 दो भागों को मिलाकर तैयार किया गया है। पहला भाग याजकीय वस्त्रों को तैयार करने के बारे में बताता है (39:1-31)। इन वस्त्रों में पायी जाने वाली वस्तुएँ - एपोद और सुलैमानी मणि (39:1-7), चपरास (39:8-21), बागा (39:22-26), और कपड़े के अंगरखे, कपड़े की पगड़ी, कपड़े की सुन्दर टोपियाँ, सनी के कपड़े की जाँघिया और चोखे सोने से बनी हुई पवित्र मुकुट की पटरी (39:27-31) थीं। दूसरा भाग (39:32-43) निवास-स्थान के निर्माण में सम्पूर्ण भाग के प्रति एक निष्कर्ष के रूप में कार्य करता है (35:1-39:43)। यह निर्माण कार्य की समाप्ति पर, मूसा के सम्मुख पूर्ण कर लिए गए उत्पाद को प्रस्तुत करने पर और इसे प्रमाणित किए जाने पर (जिसका अर्थ है कि परमेश्वर के द्वारा प्रमाणित किए जाने पर) बल देता है।

याजकीय वस्त्र तैयार करना (39:1-31)

अध्याय का प्रथम भाग इस सत्य को रेखांकित करता है कि "जिस प्रकार परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा दी उसके अनुसार" याजकीय वस्त्र तैयार करने के द्वारा इस्राएल ने परमेश्वर की आज्ञा का पालन किया। इस भाग में प्रत्येक अनुच्छेद के अन्त में यह पद देखने को मिलता है (39:1, 5, 7, 21, 26, 29, 31)। इन वस्त्रों के लिए मूल निर्देश अध्याय 28 में देखने को मिलते हैं।

निर्गमन 28 और 39 के मध्य निकट समानता नोट करने योग्य है। वस्त्रों को बनाने के लिए विवरण के रूप में जिन शब्दों का प्रयोग किया गया है वे प्रायः निर्देशों में दिए गए शब्दों की लगभग उसी समानता से मेल खाते हैं। (उदाहरण के लिए, 28:17-21 और 39:10-14 के बीच तुलना करें।)

निर्देश	वस्त्र	निर्माण
28:6-14	एपोद	39:1-7
28:15-30	चपरास	39:8-21
28:31-35	बागा	39:22-26
28:36-38	चोखे सोने से बनी हुई पवित्र मुकुट की पटरी	39:30, 31
28:39-43	कपड़े के अंगरखे, कपड़े की पगड़ी, कमरबन्द, कपड़े की सुन्दर टोपियाँ, सनी के कपड़े की जाँघिया	39:27-29

फ़िर भी, हालांकि याजकीय वस्त्रों के दो विवरण समानता में हैं साथ ही इनके मध्य रुचिपूर्ण अन्तर भी हैं। एक महत्वपूर्ण अन्तर यह है कि अध्याय 28 स्पष्टीकरण उपलब्ध करवाता है - यह कारण प्रदान करता है कि ऐसा "क्यों" है - जो अध्याय 39 में कार्य पूरा कर लिए जाने की कहानी में देखने को नहीं मिलता। इन स्पष्टीकरणों के अनेक उदाहरण देखे जा सकते हैं। (1) हारून के वस्त्र "वैभव और शोभा" (28:2) के लिए बनाए जाने थे। (2) चपरास "न्याय की चपरास" हो जो "ऊरीम और तुम्मीम" (28:15, 29, 30) को थामे रहे। (3) महायाजक के वस्त्रों में लगी सोने की घंटियाँ इसलिए थी कि "जब जब वह पवित्रस्थान के भीतर यहोवा के सामने जाए या बाहर निकले, तब तब उसका शब्द सुनाई दे, नहीं तो वह मर जाएगा" (28:35)। (4) सनी के कपड़े की जाँघिया इसलिए बनाई गई कि "[याजक का] तन ढपा रहे" कि जब जब वे तम्बू में प्रवेश करें, या पवित्रस्थान में सेवा टहल करने को वेदी के पास जाएँ तब "ऐसा न हो कि वे पापी ठहरें और मर जाएँ" (28:42, 43)।

इन दो पदों के बीच समानताएँ और अन्तर इनके आधिकारिक होने को बल प्रदान करते हैं। वे ठीक उसी समान हैं जिस प्रकार एक व्यक्ति अपनी खोज के अन्तर्गत अपेक्षा रखता है। ये समानताएँ यह सिद्ध करती हैं कि एक ही घटना के दो अन्तर रखने वाले और विरोधाभासी विवरण नहीं हैं; साथ ही अन्तर यह सिद्ध करते हैं कि एक विवरण, दूसरे विवरण की निम्न श्रेणी के साथ झुकाव सहित नहीं है।

ये दोनों विवरण, तब समान होते हुए भी अलग-अलग प्रभाव रखते हैं। अध्याय 28 इस बात पर बल देता है कि क्या किया जाना था और क्यों किया जाना था; यह वस्त्रों के आत्मिक महत्व पर विशेष ध्यान देता है। अध्याय 39 इस सत्य पर बल देता है कि पूर्व में दिए गए निर्देशों का पालन किया गया और कुछ मामलों में किस प्रकार उनका वहन किया गया। अध्याय 39 में वस्त्रों के महत्व पर अथवा जो याजक उन्हें धारण करते थे उन पर इतना अधिक बल नहीं दिया गया है परन्तु इस सत्य पर बल दिया गया है कि मूसा और इस्राएलियों ने वस्त्रों के

उत्पादन में परमेश्वर के निर्देशों का पालन ठीक उसी प्रकार किया जैसा उसने कहा।

इस्राएलियों की आज्ञाकारिता पर दिया गया बल जो कि भाग में आर-पार देखने को मिलता है वह (अध्याय 35-39) सोने का बछड़ा बनाने की घटना में उनकी भारी अनाज्ञाकारिता के विरोध में खड़ा होता है (अध्याय 32)। पाठ्य पाठक को बताता है: इस्राएल गिरा और वह सम्पूर्णता के साथ और भयंकर रूप से गिरा और परमेश्वर ने इस राष्ट्र को दण्ड भी दिया फ़िर भी जब लोग फ़िर से लौट आए तब परमेश्वर ने उन्हें क्षमा कर दिया। परिणामस्वरूप लोगों ने अपने पश्चाताप के साक्ष्य के रूप में, जिस प्रकार परमेश्वर ने कहा ठीक उसी प्रकार करने के द्वारा आज्ञा का पालन किया।

एपोद और सुलैमानी मणि (39:1-7)

[1]फिर उन्होंने नीले, बैंजनी और लाल रंग के काढ़े हुए कपड़े पवित्रस्थान की सेवा के लिये, और हारून के लिये भी पवित्र वस्त्र बनाए; जिस प्रकार यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी। [2]उसने एपोद को सोने, और नीले, बैंजनी और लाल रंग के कपड़े का, और सूक्ष्म बटी हुई सनी के कपड़े का बनाया। [3]और उन्होंने सोना पीट-पीटकर उसके पत्तर बनाए, फिर पत्तरों को काट-काटकर तार बनाए, और तारों को नीले, बैंजनी और लाल रंग के कपड़े में, और सूक्ष्म सनी के कपड़े में कढ़ाई की बनावट से मिला दिया। [4]एपोद के जोड़ने को उन्होंने उसके कन्धों पर के बन्धन बनाए, वह अपने दोनों सिरों से जोड़ा गया। [5]और उसे कसने के लिये जो काढ़ा हुआ पटुका उस पर बना, वह उसके साथ बिना जोड़ का, और उसी की बनावट के अनुसार, अर्थात् सोने और नीले, बैंजनी और लाल रंग के कपड़े का, और सूक्ष्म बटी हुई सनी के कपड़े का बना; जिस प्रकार यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी। [6]उन्होंने सुलैमानी मणि काटकर उनमें इस्राएल के पुत्रों के नाम, जैसा छापा खोदा जाता है वैसे ही खोदे, और सोने के खानों में जड़ दिए। [7]और उसने उनको एपोद के कन्धे के बन्धनों पर लगाया, जिससे इस्राएलियों के लिये स्मरण करानेवाले मणि ठहरें; जिस प्रकार यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी।

आयत 1. इस पुस्तक के अन्य भागों के आरम्भ के समान इस अध्याय का आरम्भ (देखें 40:1, 2, 17), जिस प्रकार हम आगे देखते हैं, एक सारांश के साथ होता है। लेखक ने तुरन्त प्रभाव से कहा, "आगे मैं बताऊँगा कि उन्होंने याजकीय वस्त्र किस प्रकार तैयार किए।" तब वह ठीक उसी प्रकार कार्य करते हुए आगे बढ़ा। **पवित्रस्थान की सेवा के लिये बनाए गए पवित्र वस्त्र** जिन्हें याजक धारण करते थे और **हारून** और बाद के महायाजकों **के लिये बनाए गए पवित्र वस्त्रों** के मध्य एक अन्तर रखा गया है।

जिस प्रकार परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा दी ठीक उसी समान याजकीय वस्त्र तैयार करने के द्वारा इस्राएल ने परमेश्वर की आज्ञा का पालन किया। आर. एलन कोल ने इस बात की ओर संकेत किया कि यह पद इस भाग में सात बार (39:1,

5, 7, 21, 26, 29, 31), साथ ही अगले अध्याय में भी आया है (40:19, 21, 23, 25, 27, 29, 32)। उसने बताया कि जानकारी रखते हुए इस प्रकार का दोहराव "परमेश्वर के निर्देश के अनुसार करने के लिए मूसा की विश्वासयोग्यता की ओर (निर्गमन 25:9)" और "परमेश्वर की विश्वासयोग्यता" की ओर संकेत करता है जो "अब भी अपने लोगों के बीच, उनकी आरम्भिक असफ़लता के बाद भी, निवास करता है।"[1]

आयतें 2-5. पहले, **एपोद तैयार किया गया**। यह नोट करें कि आयत 1 कहती है कि "उन्होंने" वस्त्र तैयार किए जबकि आयत 2 कहती है कि **उसने** एपोद तैयार किया। 39:1-31 में प्रयोग में लिए गए सर्वनाम उन वस्त्रों को तैयार करने वाले लोगों की ओर संकेत करता है जहाँ पर कभी "उन्होंने" (39:1, 3, 4, 6, 9, 10, 15, 16, 17, 18, 19, 20, 21, 24, 25, 27, 30, 31) और "उसने" (39:2, 7, 8, 22) जैसे शब्दों का प्रयोग किया गया है। "उसने" बसलेल की ओर संकेत करता है और "उन्होंने" शब्द उन कारीगरों की ओर संकेत करता है जिन्होंने निवास-स्थान के निर्माण का कार्य किया।[2]

अध्याय 28 में पायी जाने वाली सूचना से परे एकमात्र अतिरिक्त सूचना यह है कि एपोद के लिए सामग्री में **सोने** पर किस प्रकार कार्य किया गया।: **उन्होंने सोना पीट-पीटकर उसके पत्तर बनाए, फिर पत्तरों को काट-काटकर तार बनाए, और तारों को नीले, बैंजनी और लाल रंग के कपड़े में, और सूक्ष्म सनी के कपड़े में कढ़ाई की बनावट से मिला दिया** (39:3)। याजकीय वस्त्रों को इस प्रकार तैयार किया गया कि वे सुन्दर हों साथ ही कार्यशील हों और आत्मिक रूप से चिन्ह के रूप में कार्य करें (28:2)। (28:6 पर टिप्पणियाँ देखें।)

आयतें 6, 7. फ़िर, दिया गया विवरण बताता है कि **उन्होंने सुलैमानी मणि काटकर, जैसा छापा खोदा जाता है वैसे ही खोदे, और सोने के खानों में जड़ दिए।** इन दो मणियों पर **इस्राएल के** [बारह] **पुत्रों के नाम ... खुदवा दिए**, छ: एक मणि पर और शेष छ: नाम दूसरे मणि पर (28:10) खुदवा दिए। फ़िर इन मणियों को **एपोद के कन्धे के बन्धनों पर लगाया गया**। जब महायाजक अपने कार्य से सम्बन्धित सेवाएँ देता था तब ये **मणियाँ स्मरण** करानेवाले मणियों के रूप में कार्य करती थीं, जो चिन्ह के रूप में यह संकेत देती थीं कि वह इस्राएल के सब लोगों का प्रतिनिधित्व कर रहा है। (28:7-14 पर टिप्पणियाँ देखें।)

चपरास (39:8-21)

[8]उसने चपरास को एपोद के समान सोने की, और नीले, बैंजनी और लाल रंग के कपड़े की, और सूक्ष्म बटी हुई सनी के कपड़े में बेल बूटे का काम किया हुआ बनाया। [9]चपरास चौकोर बनी; और उन्होंने उसको दोहरा बनाया, और वह दोहरा होकर एक बित्ता लम्बा और एक बित्ता चौड़ा बना। [10]और उन्होंने उस में चार पंक्तियों में मणि जड़े। पहली पंक्ति में माणिक्य; पद्मराग, और लालड़ी जड़े गए; [11]और दूसरी पंक्ति में मरकत, नीलमणि, और हीरा; [12]और तीसरी पंक्ति में लशम,

सूर्यकान्त, और नीलम; 13और चौथी पंक्ति में फीरोजा, सुलैमानी मणि, और यशब जड़े; ये सब अलग अलग सीने के खानों में जड़े गए। 14और ये मणि इस्राएल के पुत्रों के नामों की गिनती के अनुसार बारह थे; बारहों गोत्रों में से एक एक का नाम जैसा छापा खोदा जाता है वैसा ही खोदा गया। 15और उन्होंने चपरास पर डोरियों के समान गूँथे हुए चोखे सोने की जंजीर बनाकर लगाई; 16फिर उन्होंने सोने के दो खाने, और सोने की दो कड़ियाँ बनाकर दोनों कड़ियों को चपरास के दोनों सिरों पर लगाया; 17तब उन्हों ने सोने की दोनों गूँथी हुई जंजीरों को चपरास के सिरों पर की दोनों कड़ियों में लगाया। 18और गूँथी हुई दोनों जंजीरों के दोनों बाकी सिरों को उन्होंने दोनों खानों में जड़ के, एपोद के सामने दोनों कन्धों के बन्धनों पर लगाया। 19तब उन्होंने सोने की और दो कड़ियाँ बनाकर चपरास के दोनों सिरों पर उसकी उस कोर पर, जो एपोद के भीतरी भाग में थी, लगाई। 20और उन्होंने सोने की दो और कड़ियाँ भी बनाकर एपोद के दोनों कन्धों के बन्धनों पर नीचे से उसके सामने, और जोड़ के पास एपोद के काढ़े हुए पटुके के ऊपर लगाई। 21तब उन्होंने चपरास को उसकी कड़ियों के द्वारा एपोद की कड़ियों में नीले फीते से ऐसा बाँधा कि वह एपोद के काढ़े हुए पटुके के ऊपर रहे, और चपरास एपोद से अलग न होने पाए; जैसे यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी।

आयतें 8-21. चपरास के बनाने का विवरण याजक के पहिरावे की किसी भी अन्य वस्तु से अधिक स्थान लेता है, जैसा कि अध्याय 28 में चपरास के विषय निर्देशों के लिए अधिक स्थान दिया गया था। यद्यपि वह अलग से बनाया गया था, परन्तु चपरास को **एपोद** के साथ जोड़ा गया और इस प्रकार वास्तव में वह एपोद का एक भाग ही था। चपरास का सबसे अधिक प्रत्यक्ष गुण था **चार पंक्तियों** में **मणियों** का जड़ा हुआ होना, प्रत्येक **पंक्ति** में तीन मणि। ये बारह मणि **इस्राएल के**

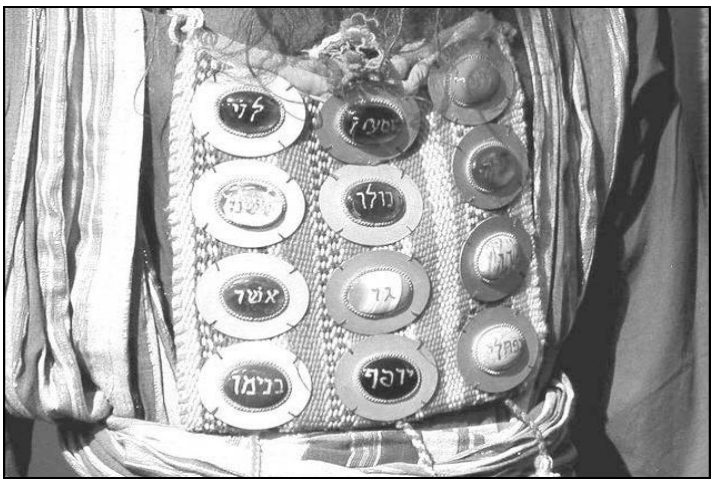

चपरास का प्रतिरूप (तिम्ना पार्क, इस्राएल)

पुत्रों के नामों की गिनती के अनुसार थे; प्रत्येक मणि पर पुत्रों में से एक का नाम खोदा गया था। महायाजक का सभी लोगों की प्रतिनिधित्व करना - **बारह गोत्रों का** दो प्रकार से दिखाया गया था: एपोद पर लगे सुलैमानी मणि और चपरास पर जड़े बारह मणि। (28:15-30 पर टिप्पणियाँ देखिए।)

यह विवरण कि चपरास पर "ऊरीम और तुम्मीम को रखा" (28:30) गया था यहाँ छोड़ दिया गया है। यदि वे पहले से विद्यमान थे और उन्हें बनाने की आवश्यकता नहीं थी तो उनके उल्लेख की कोई आवश्यकता नहीं है।

बागा (39:22-26)

22फिर एपोद का बागा सम्पूर्ण नीले रंग का बनाया गया। 23और उसकी बनावट ऐसी हुई कि उसके बीच बख़्तर के छेद के समान एक छेद बना, और छेद के चारों ओर एक कोर बनी कि वह फटने न पाए। 24उन्होंने उसके नीचेवाले घेरे में नीले, बैंजनी और लाल रंग के कपड़े के अनार बनाए। 25उन्होंने चोखे सोने की घंटियाँ भी बनाकर बागे के नीचेवाले घेरे के चारों ओर अनारों के बीचों-बीच लगाईं; 26अर्थात् बागे के नीचेवाले घेरे के चारों ओर एक सोने की घंटी, और एक अनार, फिर एक सोने की घंटी, और एक अनार लगाया गया कि उन्हें पहने हुए सेवा टहल करें; जैसे यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी।

आयतें 22-26. यह तथ्य कि महायाजक के बागे को 28:31 तथा 39:22 में **एपोद का बागा** कहा गया है संकेत किया गया है कि उसके पहिरावे का सबसे महत्वपूर्ण भाग एपोद था। यह एपोद, किसी भी अन्य वस्तु की अपेक्षा, महायाजक को अन्य याजकों और आराधकों से भिन्न करता था।

बागा साधारण **नीले** रंग का वस्त्र था जो एपोद के अन्दर पहना जाता था। उसकी सबसे विलक्षण बात थी उसमें लगे हुए **अनार**, जिन्हें संभवतः किनारे में बुना गया था, और उनसे जुड़ी हुई **घंटियाँ**। (28:31-35 पर टिप्पणियों को देखिए।)

अंगरखे, पगड़ी, टोपियाँ, कपड़े की जाँघिया, और सोने की पटरी (39:27-31)

27फिर उन्होंने हारून, और उसके पुत्रों के लिये बुनी हुई सूक्ष्म सनी के कपड़े के अंगरखे, 28और सूक्ष्म सनी के कपड़े की पगड़ी, और सूक्ष्म सनी के कपड़े की सुन्दर टोपियाँ; और सूक्ष्म बटी हुई सनी के कपड़े की जाँघिया, 29और सूक्ष्म बटी हुई सनी के कपड़े की और नीले, बैंजनी और लाल रंग की कढ़ाई का काम की हुई पगड़ी; इन सभों को जिस तरह यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी वैसा ही बनाया। 30फिर उन्होंने पवित्र मुकुट की पटरी चोखे सोने की बनाई; और जैसे छापे में वैसे ही उसमें ये अक्षर खोदे गए, अर्थात् 'यहोवा के लिये पवित्र'। 31और उन्होंने उसमें नीला फीता लगाया, जिससे वह ऊपर पगड़ी पर रहे, जिस तरह यहोवा ने मूसा को आज्ञा दी थी।

आयतें 27-29. यह खण्ड अन्य याजकीय वस्त्रों के बनाए जाने के विवरण को जारी रखता है। **हारून, और उसके पुत्रों** ने **अंगरखे, पगड़ी, टोपियाँ, कपड़े की जाँघिया,** और **फीते** पहने। ये विशेष वस्त्र उन्हें अन्य इस्राएलियों से भिन्न, याजक होने की पहचान देते थे। परन्तु केवल हारून (महायाजक) **पगड़ी** पहनता था, जबकि उसके पुत्र **सुन्दर टोपियाँ** पहनते थे। (28:39-43 पर टिप्पणियाँ देखिए।)

आयतें 30, 31. इस विवरण का अन्त सोने की पटरी, या **मुकुट** के बनाए जाने के वर्णन के साथ होता है। अध्याय 28 के निर्देशों में, यह पटरी अंगरखों, टोपियों, कपड़े के जांघियों, और फीतों से पहले आती है (28:36-38)। सोने की पटरी पर खुदा था **यहोवा के लिये पवित्र** और वह महायाजक की **पगड़ी** से जुड़ी थी। पटरी घोषित करती थी कि महायाजक "पवित्र" है। जौन आई. डरहम के अनुसार, खुदा हुआ लेख "केवल, और न ही मुख्यतः 'हारून' और उसके उत्तराधिकारियों को संकेत करता है... । वह इस्राएल है जो 'यहोवा के लिए पृथक किया गया।'"[3] हारून और उसके बाद आने वाले महायाजक जब अपने अभिषिक्त वस्त्र पहनकर परमेश्वर की उपस्थिति में आते थे तब वे इस्राएल का प्रतिनिधित्व करते थे। (28:36-38 पर टिप्पणियाँ देखिए।)

याजकीय वस्त्रों का महत्व इस तथ्य से स्पष्ट है कि उनके विवरण के लिए इतना स्थान दिया गया है। निःसंदेह, वस्त्रों के विभिन्न भागों के अपने सांकेतिक महत्व हैं। परन्तु, लेख अभिप्रेरित संकेत के बारे में बहुत कम जानकारी प्रदान करता है। परमेश्वर की योजना से बनाए गए ये वस्त्र याजकों को यहोवा की सेवकाई के लिए पृथक करते थे।

याजकों के वस्त्रों का प्रतिरूप (तिम्ना पार्क, इस्राएल)

मिलापवाले तम्बू का प्रस्तुतीकरण (39:32-43)

[32]इस प्रकार मिलापवाले तम्बू के निवास का सब काम समाप्त हुआ, और जिस जिस काम की आज्ञा यहोवा ने मूसा को दी थी, इस्राएलियों ने उसी के अनुसार किया। [33]तब वे निवास को मूसा के पास ले आए: अर्थात् घुंडियाँ, तख़्ते, बेंड़े, खम्भे, कुर्सियाँ आदि सारे सामान समेत तम्बू; [34]और लाल रंग से रंगी हुई मेढ़ों की खालों का ओढ़ना, और सूइसों की खालों का ओढ़ना, और बीच का परदा; [35]डण्डों सहित साक्षीपत्र का सन्दूक, और प्रायश्चित्त का ढकना; [36]सारे सामान समेत मेज़, और भेंट की रोटी [37]सारे सामान सहित दीवट, और उसकी सजावट के दीपक, और उजियाला देने के लिये तेल; [38]सोने की वेदी, और अभिषेक का तेल; और सुगन्धित धूप, और तम्बू के द्वार का परदा; [39]पीतल की झंझरी, डण्डों और सारे सामान समेत पीतल की वेदी; और पाए समेत हौदी; [40]खम्भों और कुर्सियों समेत आँगन के परदे, और आँगन के द्वार का परदा, और डोरियाँ, और खूँटे, और मिलापवाले तम्बू के निवास की सेवा का सारा सामान; [41]पवित्रस्थान में सेवा टहल करने के लिये बेल बूटा काढ़े हुए वस्त्र, और हारून याजक के पवित्र वस्त्र, और उसके पुत्रों के वस्त्र जिन्हें पहनकर उन्हें याजक का काम करना था। [42]अर्थात् जो जो आज्ञा यहोवा ने मूसा को दी थी उन्हीं के अनुसार इस्राएलियों ने सब काम किया। [43]तब मूसा ने सारे काम का निरीक्षण करके देखा कि उन्होंने यहोवा की आज्ञा के अनुसार सब कुछ किया है। और मूसा ने उनको आशीर्वाद दिया।

आयत 32. इस्राएल ने **मिलापवाले तम्बू** का अपना **काम** समाप्त कर लिया था! यह आयत अध्याय 39 के लिए उपयुक्त उपसंहार प्रदान करती है। यह निर्गमन 35-39 में दी गई मिलापवाले तम्बू के बनाए जाने की सारी कहानी के लिए चरमोत्कर्ष का भी कार्य करती है। परमेश्वर ने निर्गमन 25-31 में निर्देश दिए। उन सभी निर्देशों का पालन किया गया। लेख कहता है कि **जिस जिस काम की आज्ञा यहोवा ने मूसा को दी थी, इस्राएलियों ने उसी के अनुसार किया**। यह अभिव्यक्ति "जिस जिस काम की आज्ञा" पिछले अध्याय के "जैसा कि" का स्थान ले लेती है। यह भाषा खण्ड को कोष्ठकों में लाने का कार्य करती है (39:32, 42, 43)।

आयतें 33-41. यह तथ्य कि **वे निवास को मूसा के पास ले आए** संकेत करता है कि मिलापवाले तम्बू के भाग अलग-अलग बनाए गए थे; जब सब कुछ बन गया तो उन्हें एक साथ जोड़ा गया। (अध्याय 40 विभिन्न भागों के एक साथ जोड़े जाने को बताती है।) वे निवास और उसके सारे सामान को मूसा के पास उसके अनुमोदन के लिए लाए। क्योंकि मूसा परमेश्वर का प्रवक्ता था, वे परमेश्वर के अनुमोदन के भी खोजी थे।

आयतें 33 से 41 एक जाँचने की सूची या तालिका का कार्य करती हैं यह दिखाने के लिए कि यहोवा की "करने के लिए" सूची में सब कुछ कर लिया गया। खण्ड अपने उद्देश्य को भली-भांति पूरा करता है। यह इस बात पर बल देता है कि इस्राएल ने वह *सब कुछ* जो यहोवा ने बनाने के लिए कहा था बनाया था।

बनाए जा रहे मिलापवाले तम्बू के भागों की तीन सूचियाँ[4]			
भाग मिलापवाले तम्बू के	*बुलाहट बनाने की*	*विवरण निर्माण का*	*प्रस्तुति मूसा को*
मिलापवाला (तम्बू)	35:11	36:8-34	39:33, 34
बीचवाला पर्दा	35:12	36:35, 36	39:34
संदूक और प्रायश्चित का ढक्कन	35:12	37:1-9	39:35
भेंट की रोटियों की मेज़	35:13	37:10-16	39:36
दीवट	35:14	37:17-24	39:37
धूप वेदी	35:15	37:25-29	39:38
निवास के द्वार का पर्दा (आवरण)	35:15	36:37, 38	39:38
पीतल की होमवेदी	35:16	38:1-7	39:39
हौदी (कुण्ड)	35:16	38:8	39:39
आँगन	35:17, 18	38:9-20	39:40
याजकीय वस्त्र	35:19	39:1-31	39:41

आयतें 42, 43. जो इससे पूर्व की सूची में निहित था वह इन आयतों में स्पष्ट है: **इस्राएल** ने मिलापवाले तम्बू के निर्माण के लिए **जो जो आज्ञा यहोवा ने मूसा को दी थी उन्हीं के अनुसार इस्राएलियों ने सब काम किया। मूसा** ने पूरे किए गए कार्य का निरीक्षण किया, यहोवा के नमूने से उसकी तुलना की - जो उसे पर्वत पर "दिखाया" गया था (25:40) उसके साथ भी - और उसका अनुमोदन किया।

मूसा ने अपने अनुमोदन को कार्य करने वालों को आशीर्वाद देने के द्वारा प्रदर्शित किया। किसी को "आशीर्वाद" देने का अर्थ है उसकी प्रशंसा करना या उसे बधाई देना, और उस व्यक्ति की भलाई की कामना करना। मूसा ने लोगों की, कार्य को पूरा करने के लिए, प्रशंसा की, जो संकेत करता है कि परमेश्वर का प्रतिनिधि होने के कारण, वह उनके प्रयासों से बहुत प्रसन्न था। डब्ल्यू. एच. गिस्पेन ने लिखा, "मूसा ने कार्य का निरीक्षण और अनुमोदन किया; अपने आभार को व्यक्त करने के लिए उसने लोगों को आशीर्वाद देने के द्वारा पुरस्कृत किया।"[5]

व्याख्याकर्ता यह दिखाते हैं कि अभिव्यक्ति **मूसा ने उनको आशीर्वाद दिया** उत्पत्ति 1:22, 28; 2:3 को स्मरण करवाती है: जब सृष्टि के सभी भाग पूर्ण हो गए, "परमेश्वर ने उन को आशीष दी।" इस्राएल ने जो किया वह नई सृष्टि के समान था।[6] इस "नई सृष्टि" के पूर्ण हो जाने के साथ इस्राएली अपने इतिहास में एक नया

युग आरंभ करने के लिए तैयार थे; बस जो शेष था वह था मिलापवाले तम्बू को स्थापित करके उसे समर्पित करना था (अध्याय 40)।

अनुप्रयोग

"नमूने के अनुसार" (अध्याय 39)

निर्गमन 25:8, 9 में परमेश्वर ने मूसा से मिलापवाले तम्बू को "नमूने के अनुसार" बनाने के लिए कहा। प्रत्यक्षतः, मूसा को दिए गए मौखिक निर्देशों के अतिरिक्त, उसने मूसा को एक चित्र, एक दर्शन, मिलापवाले तम्बू का एक दृश्य या एक प्रतिरूप भी दिखाया। फिर उसने मूसा से कहा कि वह तम्बू को उसी "नमूने" के अनुसार बनाए (देखें 24:40; इब्रा. 8:5)। जब इब्रानियों के लेखक ने इस घटना का उल्लेख किया, तो उसने संकेत किया कि एक "स्वर्गीय" नमूना था, जिसे पृथ्वी के मिलापवाले तम्बू का प्रतिरूप होना था। वह स्वर्गीय नमूना, इब्रानियों कहती है, वर्तमान प्रणाली थी, मसीही प्रणाली।

इस पाठ में हम दो बातों पर केंद्रित होना चाहते हैं: (1) मूसा और इस्राएलियों के लिए मिलापवाले तम्बू के निर्माण में परमेश्वर के निर्देशों का पालन करना महत्वपूर्ण था। (2) यदि उनके लिए यह करना महत्वपूर्ण था, तो आज हमारे लिए भी परमेश्वर के "निवास स्थान," कलीसिया के बनाने के लिए परमेश्वर के निर्देशों का पालन करना महत्वपूर्ण है।

इस्राएल को तम्बू बनाने के लिए परमेश्वर के "नमूने" का पालन करना था। हम जानते हैं कि इस्राएल के लिए परमेश्वर के निर्देशों का पालन करना महत्वपूर्ण था क्योंकि परमेश्वर ने उनसे ऐसा कहा था (25:8, 9; देखें 19:5, 6; 25:40; 31:11; प्रेरितों 7:44)। दूसरा, परमेश्वर ने विस्तृत विवरण के साथ निर्देश दिए थे, जो यह दिखाता है कि वह चाहता था कि उनका सटीक पालन हो। इसके अतिरिक्त, प्रगट है कि परमेश्वर के निर्देशों का संपूर्ण पालन इस्राएलियों के लिए महत्वपूर्ण था क्योंकि वास्तव में इस्राएलियों ने यही किया था (39:1, 5, 7, 21, 26, 29, 31, 32, 42, 43)। प्रत्यक्षतः, इस्राएल ने सोचा था कि परमेश्वर ने जो निर्देश दिए हैं वह उनकी पूर्ति भी चाहता है, क्योंकि उन्होंने उनका ध्यान से पालन किया। इसके अतिरिक्त हम जानते हैं कि परमेश्वर उनके ध्यानपूर्वक पालन से प्रसन्न हुआ क्योंकि उसने उनके द्वारा "नमूने के अनुसार" बनाए गए तम्बू में प्रवेश किया (निर्गमन 40) और उनके प्रयासों पर आशीष दी।

आज हमें भी परमेश्वर के "नमूने" का अनुसरण करना चाहिए। नया नियम सिखाता है कि परमेश्वर का सन्देश जो मसीह और उसके प्रेरितों के द्वारा प्रकट हुआ वह मानवजाति के लिए समय के अन्त तक के मार्गदर्शन के लिए है (मत्ती 24:35; 28:18-20; यूहन्ना 16:13; गला. 1:8, 9; 2 तीमु. 3:16, 17; यहूदा 3)। इस प्रकार परमेश्वर ने उनके लिए जो मसीह के अनुयायी होना चाहते हैं एक "नमूना" दिया है, जैसा कि उसने इस्राएल को एक "नमूना" दिया था। इसके अतिरिक्त वह चाहता है कि हम उसका अनुसरण करें, उसकी आज्ञाओं को मानें,

जैसी कि उसने इस्राएल से आज्ञाकारिता चाही (मत्ती 7:21-24)। यह जारी सन्देश कलीसिया को सम्मिलित करता है, जिसमें बचाए गए जोड़े जाते हैं (प्रेरितों 2:47)। वह कलीसिया मसीह के द्वारा बनाई गई और मसीह के द्वारा बचाई गई (मत्ती 16:18, 19; इफि. 5:23-25); मसीह उस कलीसिया का सिर है (कुलु. 1:18)। जब सुसमाचार के प्रचार के परिणामस्वरूप मंडलियां स्थापित हुईं, उनका मार्गदर्शन प्रेरणा पाए हुए लोगों के द्वारा किया गया (इफि. 2:19, 20; 3:5)। इस प्रकार वे उस "नमूने" के अनुसार "बनाई" गईं जो परमेश्वर ने उन्हें दिया था। उनमें से कोई भी मण्डली सिद्ध नहीं थी; परमेश्वर द्वारा दिए गए नमूने के अनुसार प्रेरितों और अन्य नए नियम के लेखकों ने उनका निरीक्षण किया।

क्योंकि वे प्रारंभिक कलीसियाएं परमेश्वर द्वारा दिए गए नमूने के अनुसार बनाई और जांचीं गईं, इसलिए आज मसीहियों को कलीसिया बनाने या स्थापित करते समय उसी नमूने का पालन करना अनिवार्य है। हमें उसी सुसमाचार का प्रचार करना है जिसका उन्होंने तब किया था और बचाए जाने के लिए लोगों से तब जो अपेक्षा रखी जाती थी वही आज भी रखनी है। हमें अधिकार के उसी स्तर को पहचानना है - अर्थात मसीह का अधिकार जैसा नए नियम में मिलता है। अपनी मंडलियों में, हमें वही आराधना और प्रबंधन रखना है जैसा नए नियम की कलीसियाओं में पाया जाता था। हमें मसीही जीवन के उसी स्तर की माँग करनी है जैसी प्रथम सदी के विश्वासियों से की जाती थी। उस नए नियम के नमूने का पालन करना ही, वास्तविकता में, वह है जो उद्धार आंदोलन में सम्मिलित लोग करना चाह रहे हैं और जो हम सभी से करने का आग्रह करते हैं।

कभी-कभी लोगों को इस उद्देश्य से आपत्ति होती है, उससे जिसे वे "नमूने का धर्मविज्ञान" कहते हैं। वे कह सकते हैं, (1) "अवश्य ही परमेश्वर नए नियम का अनुसरण नहीं करने के लिए लोगों को दण्डित नहीं करेगा।" *हमारा उत्तर:* यदि परमेश्वर ने तब लोगों को उसके नमूने का पालन नहीं करने के लिए दण्ड दिया (देखिए लैव्य. 10:1, 2), तो वह आज ऐसा क्यों नहीं करेगा? वह वही परमेश्वर है और वह आज भी वैसी ही आज्ञाकारिता चाहता है जैसी तब चाहता था। (2) "परन्तु नए नियम में कोई प्रगट नमूना नहीं था क्योंकि प्रथम शताब्दी की कलीसियाएं एक दूसरे से भिन्न थीं।" *हमारा उत्तर:* वे एक दूसरे से कुछ बातों में भिन्न हो सकते थे - सुविधा की बातों में - परन्तु उन सब को अन्य बातों में एक समान होना था - आवश्यक बातों के विषय में। परमेश्वर के मन में एक नमूना था और उसे प्रेरणा पाए हुए लोगों पर प्रगट भी किया गया क्योंकि सभी कलीसियाओं को उसी एक माप से जाँचा गया: उस नमूने के अनुसार जो परमेश्वर ने प्रेरितों पर प्रगट किया था। (3) "निश्चय, परमेश्वर विस्तृत जानकारी के बारे में चिन्ता नहीं करता है; वह हमें तब ही दण्ड देगा जब हम किन्हीं प्रमुख मुद्दों के विषय गलत होंगे।" *हमारा उत्तर:* हो सकता है, परन्तु यह कौन निर्धारित करेगा कि परमेश्वर के लिए कौन सी बातें "प्रमुख" हैं और कौन सी नहीं? निर्गमन चित्रित करता है कि कुछ बातें जिन्हें हम "गौण" कहते हैं, वे ही परमेश्वर द्वारा "प्रमुख" मानी गईं, क्योंकि उसने लोगों को इसी के अनुसार दण्ड दिया।

उपसंहार। परमेश्वर ने मूसा और लोगों से कहा कि "सभी वस्तुओं को नमूने के अनुसार बनाओ।" हमें आज भी इसी सिद्धान्त का पालन करना है। यदि हम वही करते हैं जो नए नियम के समय में लोगों ने मसीही बनने के लिए किया था और मसीहियों के अनुसार आराधना करते और जीवन जीते हैं, तो हम उनके समान ही मसीही भी होंगे; और हम परमेश्वर को भावते हुए होंगे।

हम लौट कर आ सकते हैं (39:1)

कुछ समय पहले टेलीविज़न पर दिखाए जाने वाले एक विज्ञापन में लोगों को कहते दिखाया गया, "मैं लौट कर वापस आ गया," जो उनके किसी नए उत्पाद के स्थान पर, जिसे उन्होंने कम गुणवत्ता वाला पाया था, पुनः उस पुराने उत्पाद को, जिसे वे पहले प्रयोग किया करते थे, खरीदने से संबंधित था। हम निर्गमन 39:1 में सीखते हैं कि इस्राएल "लौटकर आया।" यद्यपि इस्राएल, पूर्णतः और बहुत बुरी रीति से गिर गया, और परमेश्वर ने उस राष्ट्र को दण्ड दिया, परन्तु लोग लौट कर आए और परमेश्वर ने उन्हें क्षमा कर दिया। फिर लोगों ने, अपने पश्चाताप के प्रमाण के रूप में, यहोवा की आज्ञाकारिता की और बिलकुल वैसा ही किया जैसा उसने उनसे कहा था। जिस प्रकार से इस्राएल लौट कर आया था, हम भी आ सकते हैं। हम चाहे कितने भी पापी क्यों न रहे हों, हमने चाहे कैसी भी गलतियां क्यों न की हों, हम लौट कर आ सकते हैं और पूरी रीति से आज्ञाकारी हो सकते हैं। यदि परमेश्वर इस्राएलियों को लौट कर आने पर स्वीकार कर सकता था, यदि यीशु पतरस को वापस स्वीकार कर सकता था, यदि मसीह सताने वाले शाऊल का उपयोग कर सकता था, तो परमेश्वर हमें भी वापस स्वीकार कर सकता है और करेगा भी। तब हम भी, इस्राएल के समान, "जैसी यहोवा ने आज्ञा दी है" उसी के समान कर सकते हैं।

प्रतिनिधित्व के द्वारा नेतृत्व (39:33)

इस तथ्य का कि "वे निवास को मूसा के पास ले आए" संकेत करता है कि मूसा ने कार्य का व्यक्तिगत रीति से पर्यवेक्षण नहीं किया; वह कार्य करने वाले लोगों पर यह सुनिश्चित करने के लिए अपनी दृष्टि गड़ाए हुए नहीं रहता था कि प्रत्येक कील अपनी सही स्थान पर ठोकी जा रही है, प्रत्येक तख्ती बिलकुल सही नाप की थी, और प्रत्येक सिलाई सही थी। कार्य का निरीक्षण विशेष गुण वाले कार्यकर्ता किया करते थे। सारे कार्य के पूरा हो जाने के उपरान्त ही पूर्ण हो गया उत्पाद ही मूसा के पास लाया गया। आज के अगुवों के लिए नेतृत्व का मूसा का नमूना एक अच्छा उदाहरण प्रस्तुत करता है।

"मूसा ने उनको आशीर्वाद दिया" - चहुँ ओर आशिषें (39:43)

अध्याय 39 का अन्त इन शब्दों के साथ होता है: "मूसा ने उनको आशीर्वाद दिया।" निवास स्थान का कार्य संपूर्ण हो गया था। बस उसे अब खड़ा करके स्थापित करना और समर्पित करना ही शेष रह गया था। मूसा ने कार्य का निरीक्षण किया

और देखा कि सब कुछ अच्छे से किया गया था। उसने कार्य करने वाले लोगों को आशीर्वाद देने के द्वारा अपना अनुमोदन दिया। मूसा द्वारा लोगों को आशीर्वाद देना हमें कुछ महत्वपूर्ण तथ्यों का स्मरण दिलाता है। (1) परमेश्वर द्वारा अपनी सृष्टि को आशीष देना (उत्पत्ति 1:22, 28)। मिलापवाले तम्बू का बनाया जाना एक प्रकार की नई सृष्टि थी। (2) हमें औरों को "आशीर्वाद" देना चाहिए - अर्थात उनके द्वारा किए गए भले कार्य के लिए उनकी प्रशंसा करना (1 थिस्स. 1:2, 3)। (3) हमारे पास इस जीवन में आशीषित होने का अवसर है (मत्ती 5:3-12; प्रेरितों 20:35)। (4) हमारे पास सदा के लिए आशीषित होने की आशा है (मत्ती 25:34; प्रका. 14:13)।

समाप्ति नोट्स

[1]आर. एलन कोल, *एक्सोडस: एन इन्ट्रोडक्शन एन्ड कमेन्ट्री,* टिन्डेल ओल्ड टेस्टामेन्ट कमेन्ट्रीज़ (डाउनर्स ग्रोव, इल्ल.: इन्टर-वर्सिटी प्रेस, 1973), 233. [2]जॉन आई. डरहम, *एक्सोडस,* वर्ड बिब्लिकल कमेन्ट्री, वोल. 3 (वाको, टेक्सस: वर्ड बुक्स, 1987), 492. [3]पूर्वोक्त, 388. [4]परमेश्वर के मूल निर्देशों और उनके एक संक्षेप के ऐसे ही अन्य रेखा-चित्र के लिए 31:7-11 पर टिप्पणियाँ देखिए। [5]डब्ल्यू. एच. गिस्पेन, *एक्सोडस,* एड वैन डेर मास, बाइबल स्टूडेंट्स कॉमेन्ट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जौंडर्वेन, 1978), 330. [6]यह विचार अनेकों व्याख्याकर्ताओं द्वारा व्यक्त किया गया है, जैसे कि पीटर एन्स, *एक्सोडस,* द एनआईवी एप्प्लिकेशन कॉमेंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जौंडर्वेन, 2000), 550.